विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं सांवेगिक बुद्धि में संबंध का अध्ययन

Abstract :

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं सांवेगिक बुद्धि में संबंध का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में छ0ग0 के दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों के 50 विद्यार्थियों (छात्र–25 एवं छात्राएँ–25) तथा शहरी क्षेत्रों के 50 विद्यार्थियों (छात्र–25 एवं छात्राएँ–25) को यादृच्छिक चयन विधि द्वारा न्यादर्श हेतु चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु शैक्षिक चिंता के मापन हेतु सरिता दहिया तथा रजनी दहिया (2018) द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता मापनी तथा सांवेगिक बुद्धि के मापन हेतु ए.के. सिंह एवं श्रुति नारायण (2015) द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का उपयोग किया गया है।

दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के चयनित छात्र–छात्राओं पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन कर उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु सह–संबंध ज्ञात किया गया। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक सार्थक संबंध नही पाया गया, छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक सार्थक संबंध नही पाया गया तथा छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक सार्थक संबंध नही पाया गयां

कुंजी शब्द – शैक्षिक चिंता, सांवेगिक बुद्धि, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी

लिलेश्वरी साहू
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
सोमनी महाविद्यालय, जिला–राजनांदगाँव (छ.ग.)

डॉ. लक्ष्मी वर्मा
सहायक प्राध्यापक
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय, जुनवानी, भिलाई

प्रस्तावना –

बालक समाज में रहता है जिसके मानदण्ड, सम्बन्ध, परम्परायें, मान्यताएँ आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास को प्रभावित करते है। बालक जिस प्रकार के समाज में रहता है उसका सामाजिक विकास वैसा ही होता है। साधारणतः उच्चवर्गीय परिवार में बालकों की रूचियाँ विस्तृत होती है क्योंकि उनके पास संसाधन अधिक होने से विचारों एवं गतिविधियों का विस्तारित करने के अवसर अधिक उपलब्ध होते है जबकि एक गरीब परिवार जो कि शिक्षा के प्रति अति सम्मान रखता है अपने बच्चों को अधिगम के अवसर देने के लिये त्याग भी कर सकता है उनके बच्चों की रूचियाँ संकुचित होती है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बाधक साबित होती है।

शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है। शिक्षा मनुष्य समुदाय की स्वाभाविक विशेषता रही है। उसने सामाजिक विकास के हर युग में समाज को दिशा और स्वरूप देने में सहायता की है। स्वयं शिक्षा का विकास कभी अवरूद्ध नहीं हुआ। मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को इसने प्रवाहित किया है। मानव इतिहास की व्यक्तिगत और सामूहिक उल्लेखनीय उपलब्धियों को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता। इतिहास के प्रवाह–मार्ग को भी शिक्षा ने काफी सच्चाई से अंकित किया है, जिसमें कुछ युग उत्थान के हैं, कुछ पतन के, कुछ संघर्ष के हैं, कुछ निराशा के कुछ काल सन्तुलन के हैं और कुछ बिखराव के।

शैक्षिक चिंता – चिन्ता संज्ञानात्मक, शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहारिक विशेषता वाले घटकों की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है। चिंता को एक प्रकार का मानसिक स्वास्थ्य विकार माना जाता है जो लोगों को भय, चिंता, आशंका और अत्यधिक मात्रा में घबराहट की ओर ले जाता है।

सांवेगिक बुद्धि –

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों 'संवेग' तथा 'बुद्धि' से मिलकर बना है, संवेग तथा बुद्धि एक दूसरे के सहयोगी तथा परस्पर समांतर क्षमतायें है। संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की तीव्रता, बुद्धि को सही दिशा में विचार करने हेतु प्रेरित करती है। संवेगात्मकता परिपक्वता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण जीवन पर उसके व्यवहार को एक सही दिशा एवं व्यवस्था देने के रूप में पड़ता है। सावेगिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने आत्मविश्वास, सुरक्षा की भावना व आत्मसम्मान द्वारा न केवल अपने संवेगों पर नियंत्रण करने में सक्षम होता है, अपितु इस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर किन्ही दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करने के लिए पूर्णरूप से योग्य होता है। संक्षिप्त रूप में उस व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व कहा जा सकता है जो अपने संवेगों पर उचित अंकुश रखते हुए उन्हीं भली–भाँति अभिव्यक्त कर सकें।

संबंधित शोध अध्ययन –

सरला रानी (2015) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक चिंता के बीच संबंध का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के छात्रों की सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक चिंता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक चिंता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निमिशा एवं आदिल (2018) ने कश्मीर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षिक चिंता का अध्ययन किया। अध्ययन में पता चला कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक और शैक्षणिक चिंता में अंतर है।

सोनल एवं शाकिर (2019) ने स्थानीय और स्कूल के प्रकार के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात होता है कि स्कूल के प्रकार का शैक्षणिक चिंता पर प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण और शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की चिंता में महत्वपूर्ण अंतर है।

दीपक एवं सूरजप्रकाश (2021) बलांगीर जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के संबंध में शैक्षिक चिंता का अध्ययन किया। परिणाम में पाया गया सरकारी और निजी स्कूल से सामाजिक आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण चर है जो व्यवसाय और शिक्षा संकेतक में शैक्षिक चिंता को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करती है।

सुरमणी मंगदा एवं अन्य (2021) ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। परिणामतः पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

नागेन्द्र एवं अखिलेश (2021) ने सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर की किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

धार्मिनीबहन के. (2021) ने किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य किशोर विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया कि उच्च एवं निम्न दुश्चिंता वाले विद्यार्थी में सार्थक अंतर नही है।

प्रियंका एवं अंजु (2022) मे विद्यार्थियो की सांवेगिक बुद्धि एंव मानसिक तनाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभावो का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की सांवेगात्मक बुद्धि की अपेक्षा अच्छी होती है। सांवेगिक बुद्धि मानसिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन तीनों के बीच कोई सार्थक अंतर नही है।

सुवाश्री (2022) ने लिंग और विद्यालय के स्थानों के संबंध के बीच परीक्षा संबंधी चिंता पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया। परिणाम के अनुसार शहरी छात्र–छात्राओं के बीच परीक्षा के स्तर में कोई अंतर नही है। गणित और मानविकी के लिए शहरी पुरूष और महिलाओं के बीच चिंता के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

मेघा एवं छविलाल (2022) ने आगरा के माध्यमिक विद्यालय के विभिन्न बोर्डों और विभिन्न लिंग के छात्रों के बीच शैक्षणिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन किया। परिणाम में शिक्षकों को छात्रों के बीच शैक्षिक चिंता को कम करने के लिए स्वस्थ तुलनात्मक वातावरण बनाने का सुझाव दिया गया।

संबंधित शोध अध्ययन की समीक्षा –

सरला रानी (2015) ने निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के छात्रों और छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि और शैक्षिक चिंता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। **निमिशा एवं आदिल (2018)** ने अध्ययन पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक और शैक्षणिक चिंता में अंतर है। **सोनल एवं शाकिर (2019)** ने परिणामों से ज्ञात होता है कि स्कूल के प्रकार का शैक्षणिक चिंता पर प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण और शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की चिंता में महत्वपूर्ण अंतर है। **दीपक एवं सूरजप्रकाश (2021)** ने परिणाम में पाया कि सरकारी और निजी स्कूल से सामाजिक आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण चर है जो व्यवसाय और शिक्षा संकेतक में शैक्षिक चिंता को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करती है। **सुरमणी मंगदा एवं अन्य (2021)** ने परिणामतः पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। **नागेन्द्र एवं अखिलेश (2021)** ने निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर किशोर बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। **धार्मिनीबहन के. (2021)** ने निष्कर्ष में पाया कि उच्च एवं निम्न दुश्चिंता वाले विद्यार्थी में सार्थक अंतर नही है। **प्रियंका एवं अंजु (2022)** मे निष्कर्ष में पाया कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की सांवेगात्मक बुद्धि की अपेक्षा अच्छी होती है। **सुवाश्री (2022)** ने परिणाम में पाया कि शहरी छात्र–छात्राओं के बीच परीक्षा के स्तर में कोई अंतर नही है। **मेघा एवं छविलाल (2022)** ने परिणाम में शिक्षकों को छात्रों के बीच शैक्षिक चिंता को कम करने के लिए स्वस्थ तुलनात्मक वातावरण बनाने का सुझाव दिया गया।

अध्ययन की आवश्यकता –

शिक्षा जगत् में गुणात्मक स्तर पर बुद्धि के लिए सतत् शोधकार्य होना आवश्यक है। इससे ज्ञान के प्रति तार्किक विकास होता है। वर्तमान परिस्थितियों में किशोर छात्र एवं छात्राओं की विघटनकारी प्रवृत्तियों को

देखते हुए प्रस्तुत समस्या का अध्ययन करना शिक्षा के क्षेत्र में अत्यावश्यक है। शैक्षिक चिंता बालक के शारीरिक बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है। अधिक शैक्षिक चिंता अथवा कम शैक्षिक विद्यार्थियों के लिये यह आयु एवं समय कैरियर के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण एवं भविष्य दृष्टि से निर्धारक होता है अतः शैक्षिक चिंता महत्वपूर्ण कारक हैं, अक्सर देखा गया है कि परीक्षा या शिक्षा जगत के विशेष विषयों से संबंधित विभिन्न प्रकार की चिंताएँ विद्यार्थी वर्ग में पाई गई। बालक की आयु के अनुसार उसका जैसे–जैसे शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है, उसकी संवेगात्मक बुद्धि भी उच्च कोटि की होने लगती है अतः शिक्षक तथा अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने उचित उत्तरों द्वारा बालक की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को शांत करें व समायोजन शक्ति को विकसित करने में सहायता कर सकें। संवेगात्मक बुद्धि एक प्रमुख सामाजिक आवश्यकता है। वर्तमान में ऐसे विषयों पर अध्ययन की आवश्यकता है क्योंकि इन विषयों पर किया गया अध्ययन विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को उनकी कार्ययोजना को बनाने में मदद करेगा।

अध्ययन का उद्देश्य –

- विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में संबंध का अध्ययन करना।
- छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में संबंध का अध्ययन करना।
- छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में संबंध का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति का परिकल्पना के मूल्यांकन के लिए आंकड़ें एकत्रण करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमा –

- प्रस्तुत शोध अध्ययन दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के 100 विद्यार्थियों (50 ग्रामीण तथा 50 शहरी) तक सीमित है।

न्यादर्श –

अध्ययन में परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु दुर्ग दुर्ग जिले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के 100 विद्यार्थियों जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों के 50 विद्यार्थियों (छात्र–25 एवं छात्राएँ–25) तथा शहरी क्षेत्रों के 50 विद्यार्थियों (छात्र–25 एवं छात्राएँ–25) को यादृच्छिक रूप से न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु सह–संबंध का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध की समस्या दुर्ग जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} –

विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.1

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ें

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	सह–संबंध
संवेगिक बुद्धि	100	54.3	2.9	0.032
शैक्षिक चिंता	100	10.05	11.12	
df=98 (0.05 स्तर पर) सार्थक संबंध नही है।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सांवेगिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की संख्या 100, मध्यमान 54.3 तथा प्रमाणिक विचलन 2.9 है तथा शैक्षिक चिंता वाले विद्यार्थियों की संख्या 100, मध्यमान 10.05 प्रमाणिक विचलन 11.12 है। स्वतंत्रता की कोटी df=98 हैं। दोनों आँकड़ों के मध्य संबंध ज्ञात करने के लिए r मान की गणना की गई। r का मान 0.032 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t–सारणी का अवलोकन किया गया। r का मान सार्थकता स्तर पर सारणी मान 0.05 से कम है। अतः विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02} –

छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.2

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों से प्राप्त आँकड़ें

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	सह–संबध
संवेगिक बुद्धि	50	55.01	9.9	0.087
शैक्षिक चिंता	50	11.3	2.8	
df=48 (0.05 स्तर पर) सार्थक संबंध नही है।				

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सांवेगिक बुद्धि वाले छात्रों की संख्या 50, मध्यमान 55.01 तथा प्रमाणिक विचलन 9.9 है तथा शैक्षिक चिंता वाले छात्रों की संख्या 50, मध्यमान 11.3 प्रमाणिक विचलन 2.8 है। स्वतंत्रता की कोटी df=48 हैं। दोनों आँकड़ों के मध्य संबंध ज्ञात करने के लिए r मान की गणना की गई। r का मान 0.087 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t–सारणी का अवलोकन किया गया। r का मान सार्थकता स्तर पर सारणी मान 0.05 से कम है। अतः छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{03} –

छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सह–संबंध ज्ञात किया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व सह–संबंध को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.3

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं से प्राप्त आँकड़ें

चर	प्रदत्तों की संख्या	मध्य मान	प्रमाणिक विचलन	सह–संबध
संवेगिक बुद्धि	50	52.02	13.3	0.031
शैक्षिक चिंता	50	8.3	3.8	
df=48 (0.05 स्तर पर) सार्थक संबंध नही है।				

.

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सांवेगिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की संख्या 50, मध्यमान 52.02 तथा प्रमाणिक विचलन 13.3 है तथा शैक्षिक चिंता वाले विद्यार्थियों की संख्या 50, मध्यमान 8.3 प्रमाणिक विचलन 3.8 है। स्वतंत्रता की कोटी df=48 हैं। दोनों आँकड़ों के मध्य संबंध ज्ञात करने के लिए r मान की गणना की गई। r का मान 0.031 प्राप्त हुआ। मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t–सारणी का अवलोकन किया गया। r का मान सार्थकता स्तर पर सारणी मान 0.05 से कम है। अतः छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

विवेचना –

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि –

- विद्यार्थियों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।
- छात्रों के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।
- छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक चिंता में सार्थक संबंध नही पाया गया।

उपरोक्त तीनों परिकल्पना में सार्थक संबंध नही पाया गया इसका कारण हो सकता है कि किशोरावथा में विद्यार्थी यदि सांवेगिक बुद्धि से परिपक्व है तो उसमें शैक्षिक चिंता विद्यमान हो आवश्यक नही होता है। किशोरावस्था में संवेगों का वेग बहुत अधिक प्रबल होता है। इस कारण से संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करना आवश्यक है। अतः माता–पिता को चाहिए कि अपने पाल्य/पाल्या को समय प्रदान कर इस तरह का वातावरण प्रदान करे जिससे उनका संवेगात्मक बुद्धि प्रबल हो सके। विद्यार्थी जब संवेगात्मक रूप से परिपक्व होंगे तब उनमें शैक्षिक चिंता में कमी पाई जायेगी।

सुझाव –

विद्यार्थी अपने जीवन में अधिक कठिनाइयों से चिंतित रहते है तथा दिशाविमुख होकर अपने रास्ते से भटक जाते है ऐसे में अध्यापकों तथा पालकों को उन्हें उचित दिशा प्रदान करना चाहिए। विद्यार्थियों को मानसिक रूप से स्वस्थ वातावरण प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। अभिभावकों को ऐसा वातावरण निर्मित करने की अत्यंत आवश्यक है जिसमें उनके पाल्य एवं पाल्या सांवेगिक रूप से दक्ष तथा चिंताओं से मुक्त हो जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो। अभिभावकों एवं शिक्षकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों में मानसिक तनाव जैसी घातक समस्या के प्रति उन्हें अवगत कर जागरूक करे एवं उनके दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप देने का प्रयास करें जिससे वह भावी समय में आने वाली विभिन्न समस्याओं का सामना सुचारू रूप से स्वयं कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **भटनागर, आर.पी. (2008):** "शिक्षा अनुसंधान", लोयल बुक डिपो, मेरठ।
- **Dipak K. Panda and Suraj (2021).** A Study Of Academic Anxiety Of Secondary School Students In Relationship To Their Socioeconomic Background In Balangir District, *International Journal of Multidisciplinary Education Research*, 10-8(2), 1-7.

- **Dharminibahan K. J. (2021).** Comparative study of emotional intelligence of adolescent students, *International Journal of Research in All Subject in Multi Languages*, 9(9), 13-15.
- **डॉ. मंगल एस. के. (2013)** शिक्षा मनोविज्ञान, पी. एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
- **डॉ. मंगल एस. के., मंगल उमा (2010),** विद्यार्थी अधिगम एवं संज्ञान टंडन पब्लिकेशन (लुधियाना)
- **जायसवाल,एस.(1992),** शिक्षा मनोविज्ञान, रेलवे क्रासिंग सीतापुर रोड, लखनऊ
- **कपिल एच.के. (2004),** "अनुसंधान विधियाँ", हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन आगरा।
- **Megha C. & Chhavi L. (2021).** A Comparative Study Of Academic Anxiety Among Different Boards And Different Gender Of Secondary School Students Of Agra
- **Nagendra P.S. & Akhilesh A. S (2021).** Impact of emotional intelligence of adolescent girls at higher secondary level of their academic achievement in Satna Disctrict, Interrnational Journal of Applied Research, 6(7), 175-178.
- **Nimisha B. &Aadil M K (2018).** Educational anxiety among senior secondary School students of Kashmir: an Exploratory Study, *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR* 5(5), 1134-1142.
- **Priynka C. & Anju T. (2022).** Study of the effects of emotional intelligence and mental stress of students on their academic achievement., Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME), 12(2). 54-59.
- **Sarla Rani (2015),** A Study of Relationship Between Emotional Intelligence and Academic Anxiety Among Secondary School Students, INDIAN JOURNAL OF RESEARCH, 4(4), 4-6.
- **Sonal S. &. Mohd. Shakir (2019.** A Study of Academic Anxiety of Senior Secondary School Students in Relation to Locale and Type of School, *Research and Reflections on Education*, 17(4), 1-9.
- **Surmani M. (2021).** Study Of Social Adjustment Capacity of Higher Secondary Students, *International Journal of Scientific Research in Science and Technology*, 8(6), 551-557.
- **त्रिपाठी, मनीष कुमार (2016),** "हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" इन्टरनेशनल जरनल ऑफ मल्टीडिसीप्लीनरी एजूकेशन एण्ड रिसर्च, 1(9), नवम्बर 2016।
- **यादव अंजू (2018),** "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन" जनरल ऑल एजुकेशनल एण्ड साईकोलोजिकल रिसर्च, 8 (2), जुलाई 2018 ।